पुस्तक समीक्षा

मननशील शिक्षण
चिंतन-मनन एवं अनुभवों के अभ्यास से समर्थ अध्यापक

पुस्तक – *रिफ़्लेक्टिव टीचिंग— ए हैंडबुक टूवर्ड्स प्रीपेयरिंग ए रिफ़्लेक्टिव टीचर*
प्रकाशक – राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली
प्रकाशन वर्ष – जुलाई, 2021
मूल्य – ₹ 100
ISBN – 978-93-91444-25-9

ऋषभ मिश्रा*
समरजीत यादव**

शिक्षक किसी वस्तु या मशीन की तरह विद्यालय और कक्षा के भीतर यांत्रिक अभ्यासों की पुनरावृत्ति करने वाला 'संसाधन' नहीं है बल्कि वह एक संज्ञान संपन्न सांवेगिक अभिकर्ता है जो क्या करना है? कैसे करना है? क्यों करना है? जैसे प्रश्नों पर सतत चिंतन-मनन करता है और इसके आधार पर अपने अभ्यास में परिष्कार करता है। इसी समझ के अनुरूप पिछले कुछ वर्षों में अध्यापकों के वृत्तिक विकास के लिए जिन नवाचार आधारित अभ्यासों को सर्वाधिक महत्व दिया गया है, उनमें 'मनन' (Reflection) का केंद्रीय स्थान है। इस पृष्ठभूमि में पुस्तक रिफ़्लेक्टिव टीचिंग— ए हैंडबुक टूवर्ड्स प्रीपेयरिंग ए रिफ़्लेक्टिव टीचर है, जिसे राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली द्वारा जुलाई, 2021 में प्रकाशित की गई थी, जो विद्यार्थी-शिक्षकों, शिक्षकों, शिक्षक-प्रशिक्षकों एवं शोधार्थियों को मननशील शिक्षण के विविध पहलुओं एवं अभ्यास से परिचित कराती है। पुस्तक में अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में आए सैद्धांतिक और नीतिगत बदलावों का उल्लेख करते हुए अध्यापन पेशे के प्रमुख बदलावों को रेखांकित किया गया है। पुस्तक इस औचित्य को भी उद्घाटित करती है कि जिस अध्यापक में वैचारिक खुलापन, दायित्व बोध, सामाजिक-राजनीतिक मुद्दों व विमर्शों के प्रति जागरूकता, तर्कसंगत निर्णय लेना, शोधोन्मुख होना, विद्यार्थियों के प्रति संवेदनशील होना, अपने सामर्थ्य और कमज़ोरियों के प्रति सचेत होना, अपने साथियों और विद्यार्थियों के प्रति समानुभूति का भाव रखना जैसे गुण होना आवश्यक है। इन गुणों के धारक पेशेवर के लिए मननशीलता अपरिहार्य है। इसे स्वीकारते हुए प्रस्तुत पुस्तक में मननशील शिक्षण के सिद्धांत, अभ्यास और अनुप्रयोग का सहज एवं सुगम समन्वय प्रस्तुत किया गया है।

मननशील शिक्षण के सैद्धांतिक और नीतिगत आयाम

पुस्तक का प्रथम खंड मननशील शिक्षण के विविध आयामों से परिचित कराता है। इस खंड में दो अध्याय हैं। प्रथम अध्याय में जॉन डीवी और डोनॉल्ड शॉन को मुख्य मननशील शिक्षण के प्रतिनिधि सिद्धांतकार के रूप में प्रस्तुत किया गया है। इस अध्याय का प्रतिपाद्य

*असिस्टेंट प्रोफ़ेसर, शिक्षा अध्ययनशाला, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय केंद्रीय विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र 442001
**असिस्टेंट प्रोफ़ेसर, शिक्षा अध्ययनशाला, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय केंद्रीय विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र 442001

है कि मनन एक सोद्देश्य गतिविधि होती है जिसके द्वारा शिक्षक अपने अभ्यास में सुधार कर सकता है। कक्षा-शिक्षण में आने वाली चुनौतियों और अनिश्चितताओं का मुकाबला करने के लिए स्वयं को तैयार कर सकता है। यह अध्यापक में समर्थता का बोध विकसित करने वाला अभ्यास है। इसके द्वारा अध्यापक कक्षा-शिक्षण से संबंधित समस्याओं को पहचान कर उनका समाधान कर सकता है। वह अपने समाजीकरण जन्य विश्वासों और पूर्वाग्रहों को संज्ञान में लेते हुए शिक्षण को इनके प्रभावों से मुक्त रखने के लिए प्रयत्न कर सकता है।

इस अध्याय में पाठक इस तथ्य से भी परिचित होंगे कि क्रिया (शिक्षण) के दौरान मनन और क्रिया (शिक्षण) के उपरांत मनन के द्वारा वे स्व-मूल्यांकन कर सकते हैं। यह अभ्यास किसी शिक्षक के शिक्षण को प्रभावी बनाते हैं। एक मननशील अध्यापक शिक्षण के दौरान आने वाली तात्कालिक समस्या को अपने पूर्व के अनुभवों और प्रयोगों के आधार पर संबोधित कर सकता है। शिक्षण के उपरांत मनन द्वारा वह अपने किए गए निर्णयों व कार्यों पर भी मनन करता है। इसके आधार पर उसे भविष्य के लिए भी योजनाओं का निर्माण करने में सहयोग प्राप्त होता है। वस्तुतः मनन के दौरान अध्यापक अपने अनुभवों का पुनरावलोकन करते हुए उसकी सीमाओं को पहचानता है। वह विचार और अभ्यास के बीच अंतर के कारणों से परिचित होता है। यह परिचय ही उसके शिक्षण में सुधार का आरंभ बिंदु बनता है। इस आरंभ बिंदु के आगे की प्रक्रिया के लिए यह अध्याय 'एक्शन स्पाइरल' की चर्चा करता है। इसके अंतर्गत चिह्नित समस्या के समाधान की योजना बनाई जाती है, इस योजना को क्रियान्वित किया जाता है, क्रियान्वयन के दौरान अवलोकन और मनन अनिवार्य घटक होता है। इसके आधार पर योजना का मूल्यांकन किया जाता है। पाठक उक्त चरणों वाले 'एक्शन स्पाइरल' को अपने कक्षा-शिक्षण के संदर्भ में प्रयुक्त कर सकते हैं।

इस अध्याय में पाठक की दृष्टि से महत्वपूर्ण सामग्री मननपूर्ण लेखन के विभिन्न प्रकारों की चर्चा है। इस अध्याय में बताया गया है कि आरंभ में शिक्षक विवरणात्मक लेखन करते हैं जिसमें कक्षा की घटनाओं का सिलसिलेवार ढंग से वर्णन अधिक रहता है, जबकि मनन का घटक अपेक्षाकृत कम होता है। संवाद पूर्ण मनन लेखक विभिन्न घटनाओं के सापेक्ष स्वयं को रखते हुए विचारात्मक प्रश्न खड़े करता है। आलोचनात्मक मनन में लेखक अपने किए निर्णयों को शिक्षा के सामाजिक, ऐतिहासिक और राजनीतिक कारणों के सापेक्ष मूल्यांकित करता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आलोक में देखा जाए तो शिक्षक से अपेक्षा है कि वह आलोचनात्मक मननकर्ता हो। इस स्थिति में ही विद्यालयी शिक्षा में बहिष्करण के अदृश्य कारकों, जैसे— जेंडर पूर्वाग्रह, भाषाई चुनौतियाँ, सांस्कृतिक रूढ़ियों आदि के प्रति सचेत रहते हुए इनका उन्मूलन कर सकता है। यह अध्याय भी आलोचनात्मक मनन पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए पाठकों में इसके प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति के विकास का कार्य करता है।

अध्याय दो में मननशील अध्यापक की विशेषताओं का वर्णन किया गया है। इस अध्याय में सोद्देश्य, इस तथ्य पर बल दिया गया कि अध्यापक को केवल कक्षा में शिक्षण प्रभावी बनाने के लिए

सुझाव न दिए जाएँ बल्कि उसे शिक्षा, समाज और राजनीति के गठजोड़, नागरिकता के विमर्शों, शिक्षा के समाजशास्त्रीय आयामों के प्रति भी सचेत किया जाए। पुस्तक में इन आयामों से संबंधित पर्याप्त सामग्री है। इस अध्याय के अगले खंड में अध्यापकों को स्व-मूल्यांकन की दो तकनीकियों— स्वॉक (SWOC), जो-हैरी (Jo-Hari) विंडो से परिचित कराया गया है। इनका उपयोग करते हुए शिक्षक अपने व्यक्तिगत सामर्थ्य और कमज़ोरियों का आकलन कर सकते हैं। इस अध्याय में इस तथ्य पर बल दिया गया है कि उक्त युक्तियों के आधार पर स्व-मूल्यांकन प्रभावी शिक्षण के लिए पर्याप्त नहीं है। एक शिक्षक को अपने विद्यार्थियों के संदर्भ, विषय की अद्यतन प्रगति, शिक्षणशास्त्र के नवाचार से भी परिचित होना चाहिए। इन आयामों के आधार पर ही एक शिक्षक विद्यार्थियों को अर्थपूर्ण संलग्नता प्रदान करते हुए ज्ञान के सहनिर्माण का परिवेश उपलब्ध कराता है। इसके अतिरिक्त इसमें मननशील शिक्षण के लिए शिक्षकों से यह भी अपेक्षा की है कि वे विद्यालयी शिक्षा की गुणवत्ता से संबंधित बहसों— पहुँच, समता, ज्ञान की राजनीति आदि के प्रति भी सचेत हों।

मननशील शिक्षण— अंतर्वस्तु और प्रक्रिया

प्रथम दो अध्यायों में सिद्धांत और नीति की चर्चा के उपरांत पुस्तक के दूसरे खंड मनन के विविध क्षेत्रों, मननपूर्ण लेखन और आकलन से संबंधित चर्चा की गई है। अध्याय तीन इस पुस्तक का सर्वाधिक प्रयोजनमूलक अध्याय है। इस अध्याय में अध्यापकों को किन आयामों पर मनन करना चाहिए? इसका प्रारूप प्रदान किया गया है। इसके अंतर्गत संस्था के रूप में विद्यालय, अध्यापक के स्वयं के विश्वास, शिक्षा से संबंधित नीतियों, कक्षा प्रबंधन, विद्यार्थी, विषय सामग्री, शिक्षणशास्त्र, अध्यापक-विद्यार्थी संबंध, आकलन और अधिगम निष्पत्ति पर विस्तारपूर्वक चर्चा की गई है। पाठक इस अध्याय के माध्यम से परिचित होंगे कि यदि वे अपने दैनिक अभ्यास में इन आयामों के प्रति सजग रहें तो वे अपनी अपेक्षित भूमिका को निभा सकते हैं। वे एक पेशेवर के रूप में विद्यालय की अधोसंरचना से लेकर दैनिक जीवन की गतिविधियों, जिनमें कक्षा-शिक्षण से लेकर खेल और सांस्कृतिक आयोजन हैं, के संदर्भ में अपनी भूमिका एवं अन्य हितग्राहियों से अपने संबंध का विश्लेषण कर सकते हैं। पाठकों का ध्यानाकर्षण करते हुए इस अध्याय में चर्चा की गई है कि अध्यापकों के सहकर्मी अर्थात साथी-अध्यापक भी ऐसे माध्यम हैं, जो प्रभावी शिक्षण के लिए महत्वपूर्ण प्रतिपुष्टि प्रदान करते हैं। अतः अध्यापकों को अपने साथियों के साथ भी अनुभवों को साझा करना चाहिए। साथी अध्यापकों से संवाद भी मनन का एक महत्वपूर्ण घटक है।

अध्याय तीन में बताए गए क्षेत्रों को ध्यान में रखते हुए अध्याय चार पाठकों के लिए डायरी लेखन द्वारा मननशील शिक्षण में संलग्न करने के प्रयोजनमूलक सूत्र प्रस्तुत करता है। इस अध्याय में बताया गया है कि डायरी लेखन के अभ्यास द्वारा शिक्षक अपने अनुभवों और अवलोकनों पर मनन करते हुए उसे अपने भावी अधिगम की सामग्री की तरह प्रयुक्त कर सकता है। इस अध्याय में सारगर्भित ढंग से प्रशिक्षुओं को चिंतनशील लेखन के तरीकों से परिचित कराया गया है। इसमें बताया गया है कि

आरंभिक दौर में प्रशिक्षु घटना संपन्न विवरण लिखते हैं। निरंतर लेखन द्वारा वे इन घटनाओं के निहितार्थों को विश्लेषित करने लगते हैं। क्रमशः उनका लेखन आख्यान युक्त और संवादपरक होने लगता है। इसके द्वारा वे अपने विचारों को संगठित करते हुए अपने निर्णयों और भावी कार्ययोजनाओं के बारे में निर्णय लेते हैं। इस अध्याय में पाठकों को सुझाव दिया गया है कि उन्हें अपनी डायरी को मित्रों के साथ साझा करना चाहिए। उसके महत्वपूर्ण हिस्सों को प्रकाशित करवाना चाहिए। इसे शिक्षक अपनी पेशेवर प्रगति का आकलन करने के उपकरण के रूप में प्रयोग कर सकते हैं।

अध्याय पाँच में आकलन और मननशील शिक्षण पर चर्चा की गई है। विस्तार की दृष्टि से यह पुस्तक का एक बड़ा अध्याय है। इस अध्याय में संस्तुति की गई है कि आकलन की प्रक्रिया पर चिंतन-मनन के बिना अध्यापक अपने शिक्षण को प्रभावी नहीं बना सकता है। इस दौरान एक अध्यापक हेतु सीखने के लिए आकलन के सिद्धांत का पालन करना आवश्यक है। इस अध्याय के पहले खंड में आकलन की विशेषताओं एवं प्रवृत्तियों पर चर्चा की गई है। यह खंड सतत एवं व्यापक मूल्यांकन, इससे संबंधित अद्यतन प्रवृत्तियों और उपकरणों को व्याख्यायित करता है। अगले खंड में इसके आधार पर अध्यापकों को शिक्षण और आकलन विषयक मननशील अभ्यास के लिए सूत्र सुझाए गए हैं। इनमें स्व-मूल्यांकन और साथियों द्वारा मूल्यांकन जैसी युक्तियों पर सर्वाधिक बल दिया गया है। यह अध्याय पाठक को सचेत करता है कि आकलन की प्रक्रिया केवल परीक्षा तक सीमित नहीं है बल्कि अध्यापक और विद्यार्थी दोनों को आकलन के आधार पर प्रतिपुष्टि प्राप्त होती है। इसे स्वीकार कर अधिगम संस्कृति में सुधार किया जा सकता है। प्रायः आकलन एवं मूल्यांकन से संबंधित पुस्तकों में आकलन की तकनीकियों पर विस्तार से चर्चा की जाती है, लेकिन इस पुस्तक में आकलन पर मनन द्वारा अधिगम संस्कृति में सुधार पर बल दिया गया है। इस दृष्टि से यह अध्याय पाठकों की दृष्टि को विकसित करने में मदद करता है।

कक्षा-शिक्षण और मनन

इस पुस्तक का तृतीय खंड सेवा-पूर्व और सेवारत अध्यापकों के लिए विषय शिक्षण की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। इसमें अंग्रेज़ी, पर्यावरण अध्ययन, सामाजिक विज्ञान, विज्ञान और गणित विषयों के कक्षा-शिक्षण के दौरान मनन और इसके परिणामस्वरूप कक्षा-शिक्षण में सुधार की संभावनाओं पर चर्चा की गई है। इस खंड के प्रत्येक अध्याय में सर्वप्रथम विषय की प्रकृति और इसके शिक्षण उद्देश्यों पर चर्चा की गई है। इसके लिए राष्ट्रीय स्तर के दस्तावेज़ों का संदर्भ लिया गया है तथा इसके अनुरूप शिक्षण उद्देश्यों की व्याख्या की गई है। इन दोनों पक्षों को ध्यान में रखते हुए अध्यापक अपने कक्षा-शिक्षण का स्व-मूल्यांकन कैसे करें? इसकी विस्तृत विवेचना प्रत्येक अध्याय में की गई है। इन अध्यायों में विषय की प्रकृति के अनुरूप कक्षा-शिक्षण के उदाहरणों का उल्लेख अध्यापकों को मनन के लिए दिशा प्रदान करता है। इसके माध्यम से पाठकों को यह समझ में आएगा कि उन्हें अपने कक्षा-शिक्षण में सतत सुधार के लिए मनन क्यों आवश्यक है? वे मनन करते समय किन पहलुओं पर ध्यान रखें? इसके लिए प्रस्तुत

अध्याय में यह सुझाव दिया गया है कि शिक्षकों को विद्यार्थियों के साथ अंतर्क्रिया, विषय ज्ञान की प्रस्तुति, आकलन के तरीकों के प्रति मनन करने की आवश्यकता है। शिक्षकों को कक्षा-शिक्षण की तैयारी और शिक्षण के उपरांत स्वयं से प्रश्न पूछना चाहिए कि विद्यार्थियों के सामने विषय को किस ढंग से प्रस्तुत किया गया? विद्यार्थियों को ज्ञान निर्माण की प्रक्रिया में कैसे भागीदार बनाया गया? कक्षा को कैसे समावेशी बनाया गया? कैसे आईसीटी जैसी तकनीकी का सकारात्मक उपयोग किया गया? इस तरह के आयामों के विषय में पाठकों को सचेत करते हुए वास्तविक उदाहरणों का प्रयोग पुस्तक को उपादेय बनाता है। उदाहरण के लिए, अंग्रेज़ी शिक्षण वाले अध्याय में भाषा के कौशलों पर बल है, तो पर्यावरण अध्ययन वाले अध्याय में परंपरागत शिक्षण युक्तियों की सीमाओं के प्रति सचेत किया गया है। इस अध्याय में 'रिफ्लेक्शन एंड एक्शन' पर बल देते हुए मननोपरांत पाठ योजना में सुधार और शिक्षण अनुभव को समग्र बनाने का सुझाव दिया गया है। इस अध्याय में समुदाय के संसाधनों का उपयोग और शाश्वत विकास ध्यान में रखते हुए कैसे विचार करें, के लक्ष्यों पर चर्चा की गई है। सामाजिक विज्ञान शिक्षण पर आधारित अध्याय में आलोचनात्मक चिंतन, कक्षा में लोकतांत्रिक परिवेश और जेंडर संवेदनशीलता के मुद्दों पर बल दिया गया है। विज्ञान एवं गणित के अध्याय अन्वेषण आधारित शिक्षण पद्धतियों के प्रयोग से परिचित कराते हैं।

सेवा-पूर्व अध्यापक शिक्षा के दौरान हर विषय की पाठयोजना में विषय शिक्षण के सामान्य उद्देश्यों का उल्लेख किया जाता है। सेवा-पूर्व अध्यापक प्रायः इसे शाब्दिक अनुष्ठान समझते हैं। खंड तीन के प्रत्येक अध्याय में यह व्याख्या की गई है कि कैसे इन सामान्य उद्देश्यों को मनन का माध्यम बनाया जाए? इस खंड के सभी अध्याय पाठक को यह समझने में सहायता प्रदान करते हैं कि ज्ञान निर्माण की प्रक्रिया में कौन-से कारक सहयोग करते हैं और कौन से कारक बाधक हैं। इन सभी अध्यायों में बल दिया गया है कि शिक्षक को विद्यार्थियों को उनके संदर्भ के सापेक्ष समझने का प्रयत्न करना चाहिए। उनमें निहित क्षमताओं को साकार करने के लिए शिक्षण युक्तियों का विकास करना चाहिए। शिक्षण द्वारा विषय, संदर्भ और शिक्षणशास्त्र की पारस्परिकता को मज़बूत करना चाहिए। शिक्षा के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए आवश्यक है कि विद्यार्थियों को सक्रियकर्ता मानते हुए उनकी उपस्थिति को कक्षा-विमर्श का हिस्सा बनाया जाए। उनकी सृजनात्मकता, जिज्ञासा और अधिगम चुनौतियों को संबोधित करने के लिए नीति का विकास करते हुए परस्पर समानुभूतिपूर्ण संबंध को विकसित किया जाए। प्रभावी कक्षा-शिक्षण में इन्हें कैसे साकार किया जाए? इसके लिए ये अध्याय पाठकों को व्यावहारिक युक्तियों से परिचित कराते हैं।

निष्कर्ष

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 अध्यापकों को शैक्षिक सुधारों को साकार करने वाला सर्वप्रमुख कर्ता मानती है। यह नीति गुणवत्तापूर्ण विद्यालयी शिक्षा के लिए जिन संस्तुतियों को प्रस्तुत करती है, उनका क्रियान्वयन मननशील शिक्षक ही कर सकता है। इस नीति की अपेक्षा है कि विद्यालयी शिक्षा के क्षेत्र में सूचना एवं प्रौद्योगिकी, कृत्रिम बुद्धि और

प्रोग्रामिंग जैसे अद्यतन क्षेत्र से लेकर भारतीय ज्ञान परंपरा, कला और शिल्प को स्थान मिले। ऐसी वृहद संस्तुतियों के क्रियान्वयक की भूमिका में शिक्षक क्या करें? क्यों करें? और कैसे करें? के सवालों का पैदा होना स्वाभाविक है। इसका उत्तर उन्हें मननशील अभ्यास से प्राप्त होगा। यह अभ्यास उनकी जिज्ञासा और अन्वेषणोन्मुखी प्रवृत्ति का भी पोषण करेगी। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आलोक में देखा जाए तो शिक्षकों को स्वयं के पेशेवर विकास के लिए तत्पर तथा जागरूक रहना होगा। उनकी भूमिका कक्षा-शिक्षण के साथ-साथ पाठ्यचर्या विकास, समुदाय से संबंध, सहकर्मियों के साथ संबंधों के आधार पर संस्थागत संस्कृति में सुधार तक विस्तृत है। उन्हें अपने अभ्यास में सतत सुधार द्वारा न केवल विद्यार्थियों के अधिगम को सुगम करना है बल्कि खुद की अभिप्रेरणा को बनाए रखना है। इसके लिए इस पुस्तक के प्रत्येक अध्याय में मननशील चिंतन के लिए जो सूत्र सुझाए गए हैं, वे उपयोगी हैं। इनकी सहायता से जो विद्यार्थी-शिक्षकों, शिक्षकों, शिक्षक-प्रशिक्षकों एवं शोधार्थियों को अपने प्रतिदिन के अभ्यास पर मनन करने की दिशा प्राप्त होगी। पुस्तक के प्रत्येक अध्याय में शिक्षा से संबंधित प्रमुख नीतियों का उल्लेख इसे अद्यतन बनाता है।